१. एना किए ?

एकटा स्त्री ,
हमर घरकें सबहे काज कऽ दैअ
समय–समय पर आबिकऽ
हमर जरुरत पुरा क दैअ
एहिके बाध ओ
परतरि दैअ
मुदा एना किए ?

जहिया हम असगरे रहैछी
तहिया ओ हमरा संग राति बितऽबैय
कखनो तिर त कखनो तार
कहियो राईके बनादै पहाड़
कखनो हमरा लेल आाखिमे नोर
आ कखनो हमरासँ दूर
मुदा एना किए ?

कि ईहे त प्रेम नहि ?
कि ईहो प्रेम छै ?
हमरा कोनो बेगरता होए
ओ सेहो पुरा कऽ दैअ
गलती जौ भऽगेल हमरासँ

त डटबो करैए

मुदा एना किए ?

ओकर आँखिमे,

एकटा भावना रहैछैक

ओकरा विश्वास रहैछैक हमरे पर

तैयो ओ हमरा डटैत रहैए

मुदा एना किए ?

किछु जौं कहि दिऐ त

भऽजाइए टोका–चाली बन्द

ओकर मूँह बन्द भइयोक

ओकर आँखि,

अपन प्रेमक गीत कहैए

मुदा एना किए ?

किछु समय बाद

जेना किछु भेले नहि हुए

जेना ओ हमरासँ चिन्तीते नहि हुए

तहिना ब्यवहार करैए

मुदा एना किए ?

२. काल्पनीक सत्य

कल्पना कऽ लितहुँ
जे रातिमे सूरज
आ दिनमे चन्द्रमा उगिगेलैए।

कल्पना ई करितहूँ
जे सूरजक किरणसँ
शितलता आ,
चन्द्रमाक किरणसँ गर्म धूप
आबऽलगलैए।

जखन पुरुषक पेटमे
बच्चा भऽसकैए
तखन ई बिचारऽमे
कि लगैए।

मुदा किनको ई बात सुनादिओन
त ओ कहता कबि पागल छथि।
आ, ई सेहो भऽसकैत अछि
जे सुाहिवालाक दिमाग
ठिक नहि होए
ओकर बुद्धि काज नहि करैत होए।

एकटा बेश्याक ब्यान सुनिकऽ

देखु,

ओ कि कहती

जे पुरुष रातिमे ओकरासंग

राति बितऽबै छैक

भ◌ा◌ोग–सम्भोग करैत छैक

आ, ओहे पुरुष

कोनो गोष्ठीमे, बैठकमे

आ शभामे जाकऽ

खिदानति करैत छैक

ओहि बेश्याकें

जेकर संग बितल राति

ओ सम्भोग कएने रहे।

जेकर नरम माउस गिजने रहे

जेकर ठाम–कुठाम चटने रहे।

आ एते भेलाक बादो

ओ पुनः ओकरालग

जाइ छैक

आ पुनः पुनः

ओई बेश्याक सून्दरताके

छुछ बर्णन अथक रुपसँ

करैत छैक।

त कहुँ

उल्टा कल्पना

करऽमे कि छैक ?

३. बिचित्र

हमरा बिचित्र लगैए

जखन ओकरा देखै छि

जे लोक ओकरा जखन तखन

पाइ दऽकऽ आन्हर भंभरा जकाँ

सुंघि लै छैक।

आ ओकरा मूँहपर

एकदम

मुस्की रहै छैक

सच वा झूठ मुदा मुस्की

ओ अपना काजक बारेमे

सोचबे नहि करैछैक

जे अन्हार रहौक।

आ किए सोचे,

जखन ओकरा लग

केओ अबैत छैक

आ अबिते हाथमे

पाइ दऽदैत छैक

आ हाथमे पाइ पैरिते

ओकर मूँह आओर

उज्जर भऽजाइत छैक।

ओकरा लग सोचबाक

ज्ञान नहि छैक कि समय ?

४. अएना

हम किए ने किए, ओकरा देखऽ नै चाहै छी
जे हमरा आगूमे बैसल अछि
की ओकरासँ बाजऽसँ पहिने किछु सोचै छी....
की हम ओ आवाज सुनने छी....
जे हमर भीतरसँ निकलैय !

हम पक्का बेबकूफ छी
हम पक्का पागल छी
पक्का हमरा बुद्धि नहि अछि
एहन विभिन्न बातसभ
हम रातिमे बड़बड़ाइत रहैत छी।

अएनासभ देबालपर लटकाएल छै
ई हमरा कहऽके नहि अछि
अए अएना ! हमहुँ चाहै छी——
अहँा हमरासँ प्रेम करू

अहँा हमरा बचपन फेर लाबि दिअ
हमर बचपन आनि दिअ
किए हम अहाँकँ असगरे चलऽ दिअ

कखनि अहाँ हमरा कहने छलहुँ,
जे हम नहि कएली आ हमरासँ गलती भऽ गेल

हम अप्पन अहंकारकेँ रस्तेपर छोड़ली
एक क्षणक प्रेमक मस्तीकेँ
हम अपना—आपसँ शिकाइत करै छी
हम मूर्ख छी, हम पागल छी,
हमरा पक्का बुद्धि नहि अछि।
हम ओकरा कहै छियै
जे बीतल राति हमरा साथ छल
खाली कामना हमर सपना अछि
भऽ सकैए हमर सपना साँच भऽ जाय
भऽ सकैए हमरा आ अहाँसँ
दूटा आगू आबए आ ठाढ़ भऽ जाय।

यदि अहाँ हमरा देखाबऽ चाहै छी
तँ क्यो हमर अप्पन बनिकऽ देखा दिअ
हमरा फेर बच्चा बना दिअ
हमर बचपना फिरता कऽ दिअ
हमर बचपना फिरता कऽ दिअ।

५.दुविधा

असगरमे बैसिकऽ
अपनापर बिचारै छलहुँ
अप्पन भावनाके हेराकऽ
अनुभवके डुबाकऽ
हम बड़ सोचली
जे हमरामे तिब्रताके कमी अछि
हमरा निश्चय भऽगेल
जे हम बड़ सोचलहुँ
जे हम अहाँक प्रेमक लागक नहि छी
मुदा ई भइयो नहि सकैए कि

अहाँके पहिलबेर देखिकऽ
हमरा मोनमे ब्याकुलता आएल
जाहिके हम बर्णन नहि कऽसकैत छी
दोसर बेर भेट होइते
हम अहाँसँ परिचित भेलहुँ
ताहिके बाद अहाँलग रहबाक
इच्छा हमरामे जागल
अहाँक संग जे हमर
भावनात्मक सम्‌बन्ध रहे
से बड़ा उपद्रबी रहे
ते हम बितल भरि राति
भगवानसँ प्रार्थना करैत

हम बड़ सोचलहुँ
जाहिसँ हम सभ्य भऽगेलहुँ
ई बात हमरा बुझऽमे चैलि आएल छल
ज्◌े हम नियंत्रनमे नहि छी
आ अपन नियंत्रन गुमारहलछी
हम समयके पकड़ छाहलहुँ
मुदा हमर भावना समयके छोइरदेलक
पहिने हम प्रेममे परलहुँ
आ बादमे बुझलहुँ
ई एक समाजीक अपराध छैक।

६. भद्रक बलि

भद्रक बलि चढ़ाओल गेल
आ हबेली पर हबेली उठाओल गेल
सब गोटेक साथमे,
मुदा इर्ष्या कएलक ओहे
जखन बिरोध कएलक सबहे
मुदा प्रत्येक क्षण
स्वान (कुकूर) सन अछि ओ
मुदा ओ,
सगरमाथा, मकालु ककरो नहि छोरत
कोशी, कर्णली सब खा जाएत
देशक माटि बिदेश पठाओत
मात्र अपन स्वार्थक लेल
ओ सब किछु करत
ओकर आदेश सर्बमान्य छैक
किए त सर्बेसर्बा ओहे बनल अछि
कानुन आ सम्पत्ति राक्षसक हाथमे
जे सत्यके नुकौने अछि
मात्र अपनाके बचाबऽलेल
सवर्ग द्वारी बनल अछि

ताहिसँ अहाँ सेहो सोचु

भद्र सबकें मारऽके क्रममे

बितल दिन ओ नुकाकऽ मारैछल

आब ओ देखाकऽ मारैए

बस,

भद्रके मारैए।

७. हमर मायकें बुद्धिए नहि छैक

हमरा लगैए,

हमर मायकें बुद्धिए नहि छैक

ओ हमरा,

जखन तखन कहैत रहैए–

निक आदमी बन,

निक पदपर जो,

नमहर नेता बन

आ अपन देशके निक दिशा बोध करो।

मुदा हमर मायकें नहि छनि बुझल

निक आदमी बनऽकें लेल

कमाए परैछैक बहुत पाइ

निक पदपर जाएके लेल

देबऽ परैछैक घुस

नमहर नेता बनऽकें लेल

जनताकें देबऽ परैछैक धोखा

मुदा हम ई सब नहि कऽसकैछी।

हम जबाब देलियनि मायकें –

गे माय, तोरा नहि छौक बुझल

तों नहि जनबे बाहरक बात

ई दुनिञामे

हम सबहे किछु कऽ सकैतछी

मुदा बेच नहि सकैछी अपनाके।

८. नामी बनिञाकें ....

सुनने छलहुँ,

प◌ा▯ लना बाबु निक गीत गबैछथि

प◌ा▯ लना बाबु निक रचना करैछथि

प◌ा▯ लना बाबु निक नेतृत्व करैछथि

प◌ा▯ लना बाबु निक बिचारक छथि

मुदा जखन हुनका सँ भेटलहुँ

त देखलहुँ ,

हुनकर स्वर महाँ बेकार

हुनकर रचनामे गलतिए–गलति

हुनकर नेतृत्वक कारणे पुतला जराओल

हुनकर बिचारक कारणे सब गाइर दैनि

तखन अनुभव भेल सबहेसँ निक हम अपने छी

९. अनेस आनन्द

बेटा नइ होइए त रवि उपास

सोहागबतीकें लेल सोमबारी उपास

इच्छा पूर्तीकें लेल मंगल आ बुद्ध उपास

धन सम्पत्तिकें लेल बृहस्पत्ति उपास

सुखी होबऽलेल शुक्रवारी उपास

आ, शनिचरा ग्रहक लेल शनि उपास।

कहऽबाली कैहिगेल रहे

आ, सुनिहार करऽलागल रहे

किछु दिन बाद ओ बिमार भऽगेली

लऽकऽ जाए परल अस्पताल

एक्स–रे देखला बाद डाक्टर बाजल

आत सुखिगेलनि तें अपरेशन करऽ परत

अपरेशन कएला बादो ओ बाँचल नहि

मुदा करऽबेरमे कैहि गेली

ॅअनेसँ आनन्द होइछैक।’

१०. इजोरिया

हेरागेल रहे हमर ठोढ़क मुस्कि

हेरागेल रहे हमर आँखिक निन

आ राति भरि बरबराइत रहि

कखन होएत दिन ?

आधा रातिमे बाहर निकलली

इजोरिया टहटह पसरलरहे

देखते हमरा खुशीक अनुभब भेल

आ हम इजोरियासँ अनुरोध कएलीए–

हे, इजोरिया अहाँ रहु एहिना

हम अहाँकें देखऽ चाहैछी

हम अहाँकें देखकऽ किछु लिखऽ चाहैछी

हम अपन साहित्यमे,

अहाँके सामिल करऽचाहैछी।

किछु क्षण बाखद, ओ लगली नुकाए

ओ लगली लजाए

हम पुछलीयनि –

हमरासँ कोन गलती भऽगेल

जे अहाँलगलहुँ लजाए

आ लगहुँ नुकाए

कनेक रुकिकऽ ओ कहली

अहाँ जकाँ सब मात्र देखे तबनइ

एतऽ त हमरा लोक छुबहुँ चाहैए।

११. मायकें प्रश्न

अकक्ष भऽगेलै ओकर माय

ई डेराएल सनक चित्कार

सुनिते–सुनिते।

जे अकाशमे सब दिन

ओहिना गुञ्जैछैक

जेना ओहि दिन

ओकर पुतहूँके सिन्दूर

पोछऽसँ पहिले

गुञ्जलरहै।

कखनो बेटाकें आ कखनो

पुतहूँकें सिन्दूरवाला सपना देखिकऽ

चौक जाइए आ

एकहिटा बात बरबराति रहैए

हमर बेटाकें नहि मार।

आ फेर ओ

एते नोर बहाबऽ लगैछ

जतेक

कानो सागरमे पानि नहि।

काल्हिखन धरि,

माय कहिकऽ बजाबऽवालाक संग

ओहन बिचित्र घटना देखिकऽ

बेटाक निर्दोश हाथ याद करैत

ओ पुछैए–

ई सून्य अकाशसँ

ई पृथ्वीसँ

कि रहैक ओकर दोस

जे ओ हमरासँ छिनागेल ?

१२. मातृभुमी

अओ मिथिलावासी,

अहाँछी एकटा शक्ति

अहाँ बचाउ मातृभुमीकें

आ करु एकर भक्ति।

अहाँ बनु संस्कृतीक रक्षक,

अहाँ बनु मिथिलाक पालक

मातृभुमीकें आगु बढ़ाकऽ

काल्हि धरि अहाँ जे किछु छली

आजुक बनु निर्माता।

आबऽवाला समयके

सबहे किछु अहाँ छि

मातृभुमीक आर्शीवाद पावि

आगु अहाँ बढ़ासकैत छि।

हमर मिथिलाकें सजाकऽ

सून्दर फूल फूलादिअ

अहाँ चाहबै त सगुतर

सून्दर फूल फूलतै

आ निके फल फरतै।

१३. मिथिलाकें जौ छि त

जिबऽचाहै छि त

मुरि उठाकऽ जिबु

मिथिलाकें जौ छि त

मैथिलि बाजु।

याद जौ करब त

मायकें याद कऽ लिअ

अपनाकें मैथिली कहब त

अपन मुरि उठालिअ।

दूनु हाथ जोरिकऽ नइ

निकम्मा बनि बैसलरहु

अपनाके ताकु ओहि ठाँम

जतऽ अहाँक प्रतिष्ठा रहे।

मिथिलाबासी बैनिकऽ अहाँ

दुनिआकें चिन्हा दिअ

देहक खुन ठन्ढागेल त

अपन खुन गरमालिअ।

१४. हमर कनिञा

हमरो करम तहिए फूटल
जे कनिञा भेल कारी
एशनो पाउडर सेन्ट लगाकऽ
बने हेमा मालीनी।

करियोकें निक नहि कहबै त
ई नइ होएत समझदारी
काम धाम के नाम पर हुनका
भऽजाइ छनि बिमारी

गाम गामकें नोतपूरीमे
संगे जाएत हमर कनिञा
प्ाहून–परक जौ आएत त
न्हि उठाएत ओ बड़का हरिञा।

देह दुखाइए, माथ दुखाइए
करत नहि आइ भन्सा
साढ़े आठ बाजिगेल त
देखऽ चसिलगेल चन्द्रकान्ता।

निक–बेजाए सुनबियौ नइ
नइ त पढ़ती ओ हमरा गाइर
चुपचाप भानस बनाबऽ परैए
नहि त खाहु परत माइर

तलब छुटल त देलियनि हुनका
खुसी भऽकहली हमरा निक लड़का
साड़ी आ मिठाइ लाबिदेली तखन
हटौलीओ नजदीकसँ सटका

फिल्म बदलल त देखाबऽजाउ
कोक–नास्तामे सय–दू सय गुमाउ
रिक्सा चैढ़कऽ आउ आ जाउ
घरमे अपनेसँ भानस बनाउ

कारी अक्षर भैस बराबर
सुनती समाचार अंग्रेजीमे
कनिञा नहि म्याडम कहू
त इज्जत रहत हिप्पीकें

औंठा छाप भैयोकऽ
कलम चाही स्टेण्डर
बज्जर खसुवा–मसोरुवा
सुनिकऽ बहारैछी घर

दहेजक लोभमे बाबूजी
कनिञा कऽदेलैथ कारी
अखखन त हम राम बनलछी
बादमे बनब महाराजी

१५. हमर आश

हमरा भऽगेल एकदमे टेन्सं
जखन सुनली ई इन्फोरमेसं
बेटा खेलऽगेल कल–ब्रेक
होबऽलागल हर्ट एटेक

हमर वाइफकें नाम रानी
होस्पीटलमे चढलनि हुनको पानी
कुपात्र बनत कि इन्जिनीयर
ओकर बेशीए अछि एक्सपेन्डिचर

जनबरी फेबररीक एक्सपेन्स
एक लाख डलर आ चालीस पेन्स
पठौलक एकटा ओ लेटर
डियर पापा, दश लाख विल बेटर

किए पठौलहूँ ओकरा अमेरिका

कनिञा करऽचाहैए मोनालीसा

मिलोडी छोरिकऽ सेन्टिमेन्टल सुनैए

रिजल्टक नाम पर डन्ड घिचैए

एस.एल.सी. पास करबौली दऽकऽ चिट

पैंतिस लाख डोनेसंमे भेला फिट

पुलिसक डन्टा एना खएलहूँ

डलफिन जकँ ा स्वस्मिङ्ग पोखरिमे कएलहूँ

सरबा बनत ओ चपाट

त कटता जाकऽ चौरीके घास

ईन्जिनियरके सर्टिफिकेट नइ लौता

त ोरता ओ हमर आश।

१६. हम आ हमर

तिनटा जुत्ताक शोल खियागेल हमर

ओकरा लेल पाछु चलैत–चलैत

सबसँ निक हमही छि लागल

ज्खन ओ हमरा इशारा कएलक

नाक सजमनि सन भऽगेल हमर

ओकरा भगाकऽ लगेली त

हम त परितर वाला नर्कमे परली

ओ चारिए महिनामे करिकबा बेटा पएलक त।

१७. मूल्य अभिबृद्धि कर

खरिदमे कर

बिक्रिमे कर

आ, सेबामे सेहो

लागिरहल अछि कर।

भंसार कर

बिकास कर

आय कर, बिकास कर

आ सबहेसँ नकहर कर

मूल्य अभिबृद्धि कर।

एकहूटा काजकऽ

सधार आ संसोधनक

गप्प होइतैक त

करे–कर बढ़ैछैक।

बेशियो किनकऽ

कम्मे किनलहूँ

आ बेरियो बेचकऽ

कमे बेचलहूँ

तहिना,
दहेजो पर जौ
कर लैगितैक
त कमे दहेजक
नाम होइतैक।

जे पचास पबैछथि
से लाख कहैछथि
आ एहिपर परोशी
पाँच लाख सोंचैछथि।
दहेजपर जौ कर लैगतैक
त ईर्शा आ तुलनाकें
बात नहि अबितैक।

पाँचो लाख पाबिकऽ
पाँच हजार कहितै
त सोतह ई दहेजसँ
लोक अपने डेरैतै।

हे सरकार
ई हमर अनुराध अछि
जे दहेजो पर कर लगादिअ
आ देशक राजश्व बढ़े नहि बढ़े
दहेज वाला अपराध हटादिअ।

१८. हमर मित

रे ! हमर मित सुगा तहूँ
असगरे उरिगेले
भोरमे पराती
आ, संझामे साँझ
गाबिकऽ सुनऽबैछले
भोरमे उठऽबैछले,
कहिकऽ सुनऽबैछले
ॅपटटु ! सीताराम कहो।’

फुलल छली संगहि
तो असगरे मौरगेले।

दूर जुनि जो हमरा तो छोरिकऽ
क्षण भरि लेल आबिजो
हमरा अप्पन बुझिकऽ।
किछुए देर नाचब
किछुए देर गाएब
हमहु तोरे संग कहब
ॅपटटु ! सीताराम कहो।’

हमहुँ आएब तारे लग

मुदा किछु क्षणबाद
किछुए देरक ई कष्ट थिक
भोगहे परत।

एकदिन हावासँ तिब्र भऽ
हमहुँ तोरे लग आएब
तोरे संग नाचब
तोरे गीत गाएब

मुदा आबहे परत
हम अएबे करब
फेर तोरे संग कहब

ॅपटटु ! सीताराम कहो।'

१९. शभा

अन्हार कऽकऽ चलिगेली एहि शभाकें
कतेको दिप बारलीए इजोतकें लेल
बिना बिचार कएने छोरिगेली एहि शभाकें
अहाँ बिनु कि रहि जाएत एहि शभामे।

मुदा, निके भेल जे समयमे चलिगेलीए
सगरो स्वार्थी छै सबहे, पच्छताएल नहि केओ
रंग बदलल छलै अहाँक आबऽसँ पहिने

अहाँक गेलाक बाद किछु आओर रंग भऽगेलै

ई रंग देखऽलेल जौ अहाँ होशमे रहिती

उरि जाइत अहाँक होश एहि शभाके देखिकऽ

आब केओ नहि अछि निक लोक एतऽ

अपन इमान हेराकऽ बैसल अछि लोक एतऽ

सजि–सजाकऽ आबिरहल अछि सकहे एहि शभामे

अहाँक अपमान कैनिहार अमर अछि एतऽ।

२०. बाट

कते भ्यावन, कते डेराओन

दुःखसँ भरल ओ संसार

डेग डेग पर गहूमन–धामन

भ्ाोरसँ बेशी भेटे साँझ

एक बेरकें वितल बाट

फेरसँ किए चलाबे भगबान

शुरुमे भेटे भरल–पुरल

बादमे भेटे एतऽ शुनसान

कते भ्यावन ....

आँखि, नजर ओ मन मिलकऽ

बनिजाए शिनेहक संसार

गाम समाजक रितक कारणे

सुखलो बाट पर भेटे बाढ़ि

क्तेक भ्यावन ....

केहन मिलन नजरि आ मनके

बनादैति अछि नककटाओन

गाम समाज देखिते करे

बाबा–दादा सभकें उद्धार

कते भ्यावन ....

२१. जीवन

हरेक क्षणमे कष्ट देखिकऽ

अकाशो गडगड़ाकऽ पानी परैत देखिक

पानि संगहि पाथैरि खसैत देखिकऽ

हावा बिहारिसँ छती होइत देखिकऽ

कष्टसँ भरल लगैए ई जीबन।

खुसीमे हँसिकऽ आनन्द ली त

आन लग अपन भावनाक वर्णन करी त

अपन खुसी दोसर संग बाँटी त

प्रत्येक क्षणमे खुसीक आभाष पाबी त

खुसयाली पूर्ण लगैए ई जीवन।

षडयन्त्रक चालिमे परिकऽ

मुदई सब संग हिम्मतसँ लरिकऽ

एक दोसरके निर्दयी बनि मारिकऽ

अपनोसँ झगड़ा–झाँटि कऽकऽ

दुबिधासँ धेरल लगैय ई जीवन।

कष्टपूर्ण जीवनकें सुखमय बनाबऽमे

खुसीयाली रोकिकऽ राखमे

दुबिधा हटाबऽके प्रयास करऽमे

असक्षमता अछितोमे ,

बड़ा आर्श्यजनक लगैए ई जीवन।